International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

जैविक खेती- रोजगार का आधार

*मनोज साँवले, **गौरव डेरिया, ***मुकेश पाटीदार

*शासकीय महाविद्यालय बकतरा ।

**शासकीय महाविद्यालय बकतरा ।

***एस.बी.एन. गवर्नमेंट पी. जी. कॉलेज बड़वानी ।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10790450

सारांश:

इतिहास के पन्नों को खंगाला जाए तो स्पष्ट होगा की भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को यथावत रखने में कृषि की अहम भूमिका रही है। साथ ही वर्तमान परिदृश्य का अध्ययन किया जाए तो प्राकृतिक स्वरूप में विभिन्न प्रकार के नकारात्मक बदलावो में कृषि की मुख्य भूमिका देखी जा सकती है। प्राचीन काल में शुद्ध कृषि कार्य किया जाता था। जो वर्तमान में नहीं हो रहा है। चाहे किसी विशेष क्षेत्र की बात हो या संपूर्ण धरातल की बात हो। यदि भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को शुद्ध बनाए रखना है तो सदाबहार कृषि पद्धति (जैविक खेती) को संपूर्ण धरा पर अपनाना होगा। जैविक खेती पद्धति भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखती है, मिट्टी की जलधारण क्षमता बढ़ती है। इसमें रसायनों का उपयोग बहुत कम होता है। और कम लागत में अधिक गुणवत्तापूर्ण उत्पादन होता है।

जैविक कृषि का मूल उद्देश्य विश्व पटल पर बढ़ती जनसंख्या के लिए कीटों और रोगों पर नियंत्रण रखते हुए खाद्य फसलों के उत्पादन को बढ़ाना है, ताकि सुरक्षित वह स्वास्थ्यकारी उत्पादन उपलब्ध हो सके, साथ ही प्राकृतिक संसाधनों व पर्यावरण को कम से कम हानी हो। तथा वर्तमान युथ को एक ऐसा रोजगार प्राप्त हो। जो प्रकृति के अनुकूल व हितेषी हो। देश में बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, पंजाब के कई प्रतिभाशाली युवा उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए आगे आए हैं ।

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

ये बखुद तो जैविक कृषि कर रहे हैं साथ ही कृषि जगत में जागरूकता का काम भी कर रहे हैं। यदि आज का युवा पूर्ण रूप से उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद जैविक कृषि की और अग्रसर होता है तो विभिन्न संगठनों के माध्यम से किसानों को जागरुक कर तथा जैविक खाद बनाते हुए रोजगार भी पैदा कर सकता है। जैविक खेती के जरिए व्यापार(बिजनेस) और एंटरप्रेन्योरशिप से न सिर्फ लाभ हो, बल्कि अन्य के लिए रोजगार भी पैदा हो सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्र के वे युवा जो रोजगार तलाश रहे हैं।

उन्हें काम भी दिया जा सकता है। जैविक खेती से प्रारंभिक तौर पर उत्पादन में कुछ गिरावट तो होती है। परंतु कुछ समय पश्चात खेती को विकास की पटरी पर आने से कोई नहीं रोक सकता। इस प्रकार जैविक खेती से किसानों का भविष्य उज्ज्वल तो है ही साथ ही रोजगार में भी सहायक होता है।

मुख्य शब्द : कृषि, रोजगार, प्रकृति, परिदृश्य, शुद्धता, सदाबहार, पद्धति, उत्पादन, विकास, व्यापार, जागरूकता।

1. परिचय :

प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकूल तथा प्रकृति वातावरण के अनुकूल कृषि की जाती थी, जिससे जैविक और अजैविक पदार्थों के बीच आदान-प्रदान का चक्र(Ecological system) निरंतर चलता रहता था। के फल स्वरुप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। कृषि के साथ पशुपालन भी किया जाता था। अर्थात कृषि एवं पशुपालन संयुक्त रूप से अत्यधिक लाभदायक हुआ करता था। प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यंत उपयोगी था। वर्तमान परिवेश में पशुपालन धीरे-धीरे हो गया, साथ ही कृषि में तरह-तरह की रासायनिक करो वी कीटनाशकों का प्रयोग बढ़ जाने के फलस्वरुप जैविक और अजैविक पदार्थों के चक्र (Ecological system) का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। और वातावरण प्रदूषित होने से मानव जाति(प्राणी मात्र) के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है।

संपूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या के भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा अधिक से अधिक खाद्य उत्पादन करने के लिए कई तरह के रासायनिक खादो, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग एक गंभीर समस्या है। अब हम रासायनिक खादो, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खादो एवं दवाइयो का उपयोग कर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुद्ध रहेगा और मानव एवं प्रत्येक जीव स्वस्थ रहेगा। प्रक्रिया से कई नए-नए तारों का सृजन भी होगा।

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

2. जैविक खेती :

कृषि की वह पद्धति जिसमें कीटनाशकों, अनुवांशिक रूप से संशोधित जीवो, एंटीबायोटिक और वृद्धि हार्मोन के उपयोग को शामिल किए बिना फसल और पशुपालन के उत्पादन की एक प्रक्रिया है।

जैविक खेती प्रणाली एक समग्र दृष्टिकोण प्रणाली है जिसमें मिट्टी के जीवो, पौधों, पशुधन और लोगों पर ध्यान केंद्रित करते हुए कृषि- पारिस्थितिकी तंत्र की उत्पादकता और शक्ति को अनुकूलित करने के लिए डिजाइन किया गया है।

3. शोध प्रविधि :

शोध कार्य करने के विशेष नियम अथवा विधि, शोध प्रविधि कहलाती है। दिशा कार्य के शोध कार्य की विशिष्ट तकनीक या कौशल भी यह कह सकते हैं। शोध कार्य करने के विशेष नियम से तात्पर्य है रिसर्च मेथाडोलॉजी से। विभिन्न प्रकार की वैज्ञानिक पद्धति ही शोध प्रविधि है। उक्त शोध पत्र को तैयार करने में द्वितीयक समानको वाली प्रविधि का प्रयोग किया गया है। शोध प्रविधि किसी भी शोध कार्य को तैयार करने के लिए अति महत्वपूर्ण होती है, शोध प्रविधि के बिना शोध कार्य के विषय में सोचने तक गलत होता है।

4. शोध के उद्देश्य :

1. जैविक कृषि का रोजगार में योगदान का अध्ययन करना।
2. कृषक व निम्न वर्ग के परिवारों मैं रोजगार के विभिन्न तरीकों का अध्ययन करना।
3. कृषि के क्षेत्र में व्याप्त बेरोजगारी को ज्ञात करना।
4. जैविक कृषि का व्यवसाय में योगदान का अध्ययन करना।
5. जैविक कृषि से रोजगार के प्रकारों का अध्ययन करना।

5. जैविक खेती का इतिहास :

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

पारंपरिक खेती (विभिन्न युगों और स्थान में कई विशेष प्रकार की) कृषि का मूल प्रकार थी, और हजारों वर्षों से इसका अभ्यास किया जा रहा है। सभी पारंपरिक खेती को अब जैविक खेती माना जाता है। हालांकि उस समय कोई ज्ञात अकार्बनिक विधियां नहीं थी। उदाहरण के लिए वन, बागवानी, एक पूर्ण रू से जैविक खाद्य उत्पादन प्रणाली जो प्रागैतिहासिक काल से चली आ रही है , को दुनिया का सबसे पुराना और सबसे लचीली कृषि पारिस्थितिकी तंत्र माना जाता है। औद्योगिक क्रांति ने अकार्बनिक तरीकों की शुरुआत की जिनमें से अधिकांश अच्छी तरह से विकसित नहीं थे और उनके गंभीर दुष्प्रभाव थे। जैविक खेती के इस आधुनिक पुनरुद्धार का इतिहास 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध का है, जब इन नए सिंथेटिक, गैर जैविक तरीकों पर निर्भरता बढ़ रही थी।

भारत परंपरागत रूप से दुनिया का सबसे बड़ा जैविक कृषि करने वाला देश है, यहां वर्तमान में भी बहुत बड़े परंपरागत ज्ञान के आधार पर जैविक खेती की जाती है। भारत में जैविक खेती अपने वाला पहला राज्य सिक्किम है। लगभग 75000 हेक्टर कृषि भूमि पर जैविक प्रथाओं को लागू करके सिक्किम भारत का पहला पूर्ण रूप से जैविक राज्य बन गया है।

मध्य प्रदेश में सर्व प्रथम 2001-02 में जैविक खेती का आंदोलन चलाकर प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकासखंड के एक गांव में जैविक खेती प्रारंभ की गई और इन गांवों को "जैविक गांव" का नाम दिया गया। इस प्रकार प्रथम वर्ष में कुल 313 ग्रामों में जैविक खेती की शुरुआत हुई। श्री सुभाष पालेकर (पद्मश्री से सम्मानित) को भारत के कई कृषक समुदायों द्वारा" कृषिका ऋषि" नाम से जाना जाता है। वह एक कृषि वैज्ञानिक है, जिन्होंने देश में प्राकृतिक खेती की अवधारणा को आगे बढ़ाया।

सामान्यत 19वीं सदी, 20 वी सदी या फिर वर्तमान की बात की जाए तो जैविक खेती का इतिहास भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अलग-लग रहा है। परंतु प्रागैतिहासिक काल या उससे पहले मानव जाति के जन्म से जैविक खेती (प्राकृतिक कृषि) ही होती आ रही थी। प्राकृतिक कृषि की और मानव के कदम बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्य उत्पादन के कारण आगे बढ़े।

6. रोजगार के अवसर :

आधुनिक जैविक कृषि तकनीको के महत्व को बढ़ावा देने के लिए कई महाविद्यालय और विश्वविद्यालय ने जैविक कृषि पाठ्यक्रम बनाए हैं। विशेषतः NEP- 2020 में भी इसका प्रावधान है। इच्छुक उम्मीदवार जैविक खेती के साथ कृषि व्यवसाय में एक अच्छा पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद नर्सरी,

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

खेतों और भूमि निर्माण कंपनियों में प्रवेश स्तर के पदों के माध्यम से व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। कुछ फॉर्म या कृषि व्यवसाय संभावित उम्मीदवारों को औपचारिक इंटर्नशिप भी प्रदान करते हैं। एक सफल पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद एक व्यक्ति जैविक खेती के व्यवसाय का विस्तार करने के लिए विपणन रणनीति सीख सकता है और उत्पादित भोजन पर प्रमाणिक जैविक लेवल का दावा कर सकता है। भारत के 'बजट' 2023 में वित्त मंत्री द्वारा घोषणा की गई की सरकार वैकल्पिक उर्वरकों और रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देने के लिए केंद्र शासित प्रदेशों को प्रोत्साहित करने के लिए एक नई योजना "पीएम प्रमाण" लॉन्च करेगी। साथ ही यह भी ऐलान किया गया है कि भारत में एक करोड़ किसानों को रसायनयुक्त खेती के लिए सहायता भी दी जाएगी।

7. जैविक खेती में (नौकरियां) रोजगार :

1- जैविक कृषि या खाद्य वैज्ञानिक

2- जैविक किसान या रेंचर

3- कार्बनिक हैंडलर

4- कार्बनिक प्रमाणन एजेंट

5- जैविक कृषि विज्ञान शिक्षक उत्तर माध्यमिक

6- ऑर्गेनिक आला रिटेलर

7- जैविक कृषि प्रबंधन

8- कार्बनिक रेस्तरां

8. समस्याएं :

1. आरंभ के तीन-चार वर्षो में कृषि उत्पादकता में गिरावट। भूमि संसाधनों को जैविक खेती से रासायनिक खेती में बदलने में अधिक समय नहीं लगता परंतु रासायनिक से जैविक की ओर जाने में समय लगता है।
2. जैविक कृषि से जुड़ी कृषि तकनीक हेतु जागरूकता का अभाव।
3. जैविक खाद्य की उपलब्धता में कठिनाई।

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

4. वित्तीय सहायता का अभाव।

5. आधुनिक रासायनिक खेती ने मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणुओं को नष्ट कर दिया, अतः पुनःनिर्माण में 3-4 वर्ष लगा सकते हैं।

9. उपसंहार :

मानव जन्म के पश्चात जो कृषि कार्य प्रारंभ हुआ वह जैविक (प्राकृतिक) तरीके से होता था। परंतु दुनिया की बढ़ती आबादी ने इस प्राकृतिक (जैविक) ततरीकों मैं परिवर्तन करने को विवश कर दिया था। परंतु अब समय बदल रहा है विश्व पटल पर फिर से इस पुरानी पद्धति को अपना कर कृषि कार्य करना होगा अन्यथा मानव-जाति के साथ संपूर्ण जीव जगत इस धरा पर अधिक समय तक जीवित नहीं रह पाएगा।

दुनिया की बढ़ती आबादी को खिलाने के लिए जैविक खेती भविष्य का एक अत्यधिक प्रभावी समाधान हो सकता है। और अधिक मजबूत खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने का एक तरीका हो सकता है। टिकाऊ जैविक खाद्य उत्पादन विधियों से पौष्टिक खाद्य पदार्थों का उत्पादन, जैव विविधता का संरक्षण, और जलवायु परिवर्तन को काम किया जा सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हमारी धारा का संतुलन (जलवायु परिवर्तन/प्रदूषण बना रहा तो यह संपूर्ण मानव जगत को भिन्न-भिन्न संसाधन स्वतः ही प्रदान करती रहेगी। जिससे कभी भी रोजगार की समस्या नहीं होगी।

10. संदर्भ सूची :

1.mpkrishi.mp.gov.in

2. https//hindi.coreerindia.com

3. hi.m.wikipedia.org

4. डगलस जॉन मैककोनेल (2003)। कैंडी के फॉर्म:और सम्पूर्ण डिजाइन के अन्य उद्धमापी। ISBN-9780754609582.